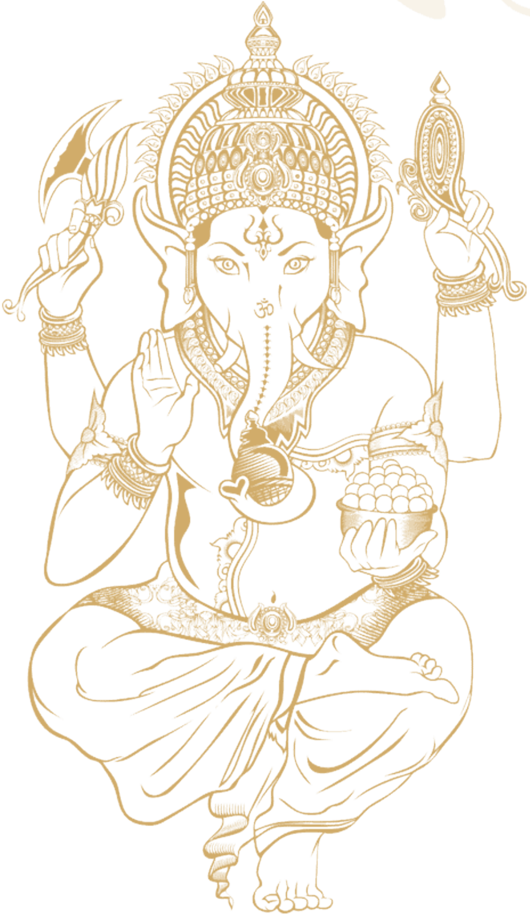

16 Aug 2025

03:30 PM

Gurgaon

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120451301

तिथि 16/08/2025 **समय** 15:30:00 **वार** शनिवार **स्थान** Gurgaon **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:58
अक्षांश 28:27:00 उत्तर **रेखांश** 77:01:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:56 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	12:48:16 घं
वेलान्तर	00:04:17 घं
सूर्योदय	05:51:57 घं
सूर्यास्त	18:59:50 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	भाद्रपद
पक्ष	कृष्ण
तिथि	8
नक्षत्र	कृतिका
योग	ध्रुव
करण	कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मेष
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	गरुड़
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	इ-ईशा
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-स्वर्ण
होरा	मंगल
चौघड़िया	लाभ

विंशोत्तरी
सूर्य 3वर्ष 5मा 28दि
सूर्य
16/08/2025
13/02/2029

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	16/08/2025
गुरु	20/12/2025
शनि	02/12/2026
बुध	09/10/2027
केतु	13/02/2028
शुक्र	13/02/2029

योगिनी
उल्का 3वर्ष 5मा 28दि
उल्का
16/08/2025
13/02/2029

	00/00/0000
	16/08/2025
संकटा	15/08/2026
मंगला	14/10/2026
पिंगला	13/02/2027
धान्या	15/08/2027
भ्रामरी	14/04/2028
भद्रिका	13/02/2029

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			04:23:51	धनु	मूल	2	केतु	चंद्र	---	0:00			
सूर्य			29:35:04	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	शनि	मित्र राशि	1.55	आत्मा	पितृ	वध
चंद्र			02:13:59	वृष	कृतिका	2	सूर्य	गुरु	उच्च राशि	1.20	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल			11:42:28	कन्या	हस्त	1	चंद्र	मंगल	शत्रु राशि	1.28	मातृ	भ्रातृ	सम्पत
बुध			11:33:58	कर्क	पुष्य	3	शनि	चंद्र	शत्रु राशि	0.98	पुत्र	ज्ञाति	साधक
गुरु			20:41:32	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.24	भ्रातृ	धन	प्रत्यारि
शुक्र			24:46:44	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	बुध	मित्र राशि	1.38	अमात्य	कलत्र	प्रत्यारि
शनि	व		06:46:12	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	बुध	सम राशि	1.43	ज्ञाति	आयु	साधक
राहु	व		24:21:22	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	प्रत्यारि
केतु	व		24:21:22	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

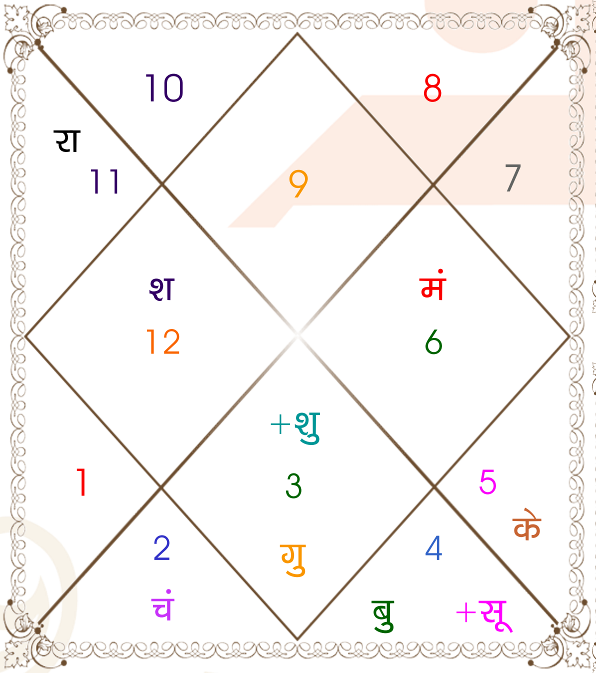

चन्द्र कुंडली

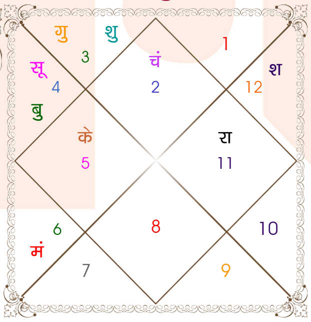

नवमांश कुंडली

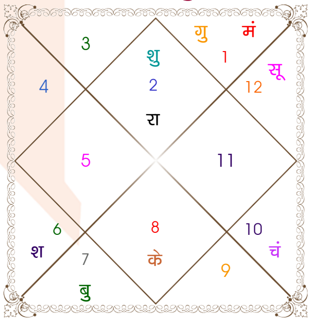

सर्वाष्टकवर्ग

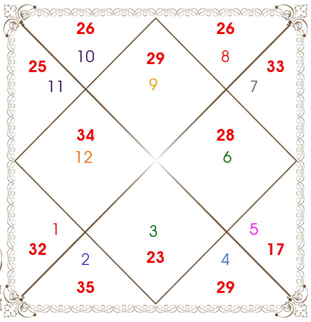

दशमांश कुंडली

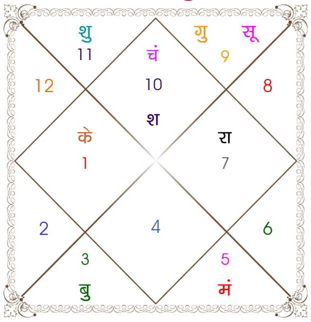

नक्षत्रफल

आपका जन्म कृतिका नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र है। नक्षत्रानुसार आपका गण राक्षस, योनि मेष, वर्ण वैश्य, नाड़ी अन्त्य तथा वर्ग गरूड़ है। द्वितीय चरण में उत्पन्न होने के कारण आपके जन्म नाम का आद्याक्षर "इ" या "ई" होगा।

कृतिका नक्षत्र में उत्पन्न होने के कारण आप कंजूस प्रवृति की होंगी। धन संग्रह करने में आप अति प्रवीण होंगी परन्तु व्यय करने में आप अत्यन्त कृपणता का प्रदर्शन करेंगी। आपके अधिकांश कार्यों से परिवार तथा अन्य जनों को असुविधा होगी। साथ ही कार्य करने की भी आपकी इच्छा अल्प रहेगी तथा नींद भी आपको अधिक आएगी। अतः अपने इस आलसपन के कारण यदा कदा भूख से भी पीड़ित होना पड़ेगा।

कृपणः पापकर्माश्च क्षुधालुर्नित्य पीड़ितः।
अकर्म कुरुते नित्यं कृतिका संभवेन्नरः।।
मानसागरी

अर्थात् कृतिका नक्षत्र में उत्पन्न बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से व्याकुल, दूसरे की स्त्री में अनुरक्त, क्रूर तथा कृतघ्न एवं धनी होता है।

भोजन आप अधिक मात्रा में भक्षण करेंगी तथा आप कभी भी किसी की बात को सहन नहीं करेंगी। साथ ही अपने क्षेत्र में प्रसिद्धि भी प्राप्त करेंगी। आपके मुखमंडल पर तेजस्विता की भी झलक रहेगी।

बहुभुक् परदारतस्तेजस्वी कृतिकासु विख्यातः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् कृतिका नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुभोजन कर्ता, परस्त्रीगमन करने वाला, असहनशील तथा विख्यात होता है।

विद्या धन ही आपका अपना श्रेष्ठ धन होगा जिसे अपने अथक प्रयास तथा परिश्रम से प्राप्त करेंगी। आप एक विदुषी या उच्चाधिकार प्राप्त महिला भी हो सकती हैं।

तेजस्वी बहुलोद्भव प्रभुसमोडमूर्खश्च विद्याधनी।
जातक परिजातः

अर्थात् कृतिका में उत्पन्न जातक तेजस्वी, उच्चाधिकार प्राप्त, विद्वान तथा विद्या का धनी होता है।

सत्य का आप अल्प मात्रा में ही पालन करेंगी। बिना किसी उदद्देश्य के इधर उधर भ्रमण करना आपकी दिनचर्या का एक भाग होगा। आप मुँह से यदा कदा कठोर शब्दों का प्रयोग

करेंगी जिसे अन्य जनों को परेशानी होगी। साथ ही धनाभाव भी रहेगा। आप अपने कर्तव्यों का भी पूर्ण रूप से पालन नहीं करेंगी जिससे घर परिवार जन के लोग आपसे प्रायः दुःखी रहेंगे। अतः आलस्य को त्याग कर अपने कार्यों में आपको सदैव सक्रिय रहना चाहिए।

क्षुधाधिकः सत्यधनैर्विहीना वृथाटनोत्पन्नमतिकृतध्नः।
कठोरवाग्गहितकर्म कृत्स्याचेत्कृतिका जन्मनि यस्य जन्तो।।
जातकाभरणम्

अर्थात् कृतिका में उत्पन्न मनुष्य भूख से पीड़ित सत्य एवं धन से रहित, व्यर्थ ही घूमने वाला, कृतध्न कटुवक्ता तथा अकर्तव्य करने वाला होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ है। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा। अपितु अधिकांश शुभ ही रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे वे सभी आपसे पराजित तथा प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आप स्वाभाविक रूप से क्रोध या उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगी। आप सुन्दर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा शरीर में लावण्यता पूर्ण रूपेण विद्य मान रहेगी। जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप अल्प मात्रा में शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी।

आप वृष राशि में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपका वर्ण गौरवर्ण तथा गाल स्थूल होंगे। आपकी आँखें मोटी तथा बड़ी बड़ी होंगी। आपकी प्रकृति आलसी भी होगी। उत्तमकुल में उत्पन्न लोगों की आप सेवा करेंगी तथा उनके प्रति सदैव श्रद्धाभाव रखेंगी। गुरु तथा ब्राह्मणों की आप आज्ञाकारिणी होंगी और उनके प्रति आपके मन में आदर का भाव विद्यमान रहेगा। आपकी प्रकृति कफ युक्त होगी। कभी कभी वात का भी इसमें समावेश हो जाएगा। अपने सारे कार्यकलापों को आप बुद्धिमतापूर्ण सम्पन्न करेंगी। साथ ही आपके बाल सुन्दर घने तथा घुंघराले होंगे।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरूजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

समस्त सुखों का आप उपभोग करेंगी तथा स्वाभाविक रूप से आपकी दानशीलता की प्रवृति रहेगी। शुद्धता तथा सफाई पर आप विशेष ध्यान देंगी तथा कार्यों को आप सम्पन्न

करने में दक्ष होंगी। बुद्धि तथा बल से आप युक्त रहेंगी। आपके पास धनार्जन प्रचुर मात्रा में होगा फलस्वरूप आपकी प्रवृति विलासयुक्त होगी। सर्वभौतिक सुख साधनों पर आप उन्मुक्त रूप से व्यय करेंगी। चेहरे पर आपका तेज स्पष्ट परिलक्षित होगा। आपकी मित्रता अच्छे लोगों से होगी तथा दीर्घकाल तक स्थायी रहेगी।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपके चेहरे का आकार बड़ा तथा जानुभाग लम्बा होगा। आपके जीवन के प्रथम दो भाग सामान्य कष्ट से और अन्तिम दो भाग सुखपूर्वक व्यतीत होंगे। समय समय पर आप त्याग की भावना का भी प्रदर्शन करेंगी। आप किसी भी आदमी को उसके अपराध या गलती पर क्षमा करने की शक्ति भी रखेंगी। आपकी पीठ, चेहरे या बगल में तिल मस्सा या चोट का निशान हो सकता हैं।

पृथूरूवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

संतति में आपकी कन्याओं की संख्या पुत्र संततियों से अधिक होगी तथा आपका आचरण या व्यवहार उत्तम रहेगा। धन ऐश्वर्य का उपभोग कर आपकी कीर्ति दूर दूर तक व्याप्त होगी।

दाताकान्त यशोधनोरूचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

वक्षस्थल आपका विशाल तथा विस्तृत होगा तथा आपकी प्रवृति चंचल होगी। विवेक-अविवेक का आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा गलत कार्य या कदम कम ही उठाएंगी। साथ ही चलने की गति आपकी दर्शनीय होगी।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङघः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप धीमी धीमी चलना पसन्द करेंगी तथा अपने समस्त कार्यों को दक्षतापूर्ण करेंगी। परोपकार की भावना से युक्त हो कर दूसरे लोगों की यत्न से भलाई करने का भी प्रयत्न करेंगी। इस प्रकार अपने अच्छे तथा पुण्य कार्यों के द्वारा आप सुख का अनुभव करेंगी।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

आपका स्वरूप सुन्दर एवं दर्शनीय होगा। मुखाकृति आपकी विशाल होगी तथा सविलास गमनप्रिय आपकी प्रवृति होगी। आप कष्टों को भी सहन करने में सफलता प्राप्त करेंगी। आप एक अधिकार सम्पन्न समृद्ध महिला होंगी। जठराग्नि की प्रबलता आपके अन्दर विद्यमान रहेगी। पुरूषवर्ग में आप विशेष लोकप्रिय रहेंगी। एवं युवा तथा वृद्धावस्था में सुख की प्राप्ति करेंगी। एतदिरिक्त आप अच्छी स्वभाव वाली विष्णु तथा भगवान शंकर की आराधना करने वाली भी होंगी।

कान्तः खेलगतिः पृथूरूवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वेबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आप राक्षस गण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी प्रवृति कभी कभी व्यर्थ की बातें बोलने वाली होगी। तथा हृदय में करूणा का भाव कम ही रहेगा। आपकी प्रवृति बात बात पर उत्तेजित तथा क्रोधित होना है। अर्थात् आप शीघ्र ही क्रोधित हो जाएंगी साथ ही अपने कार्य सिद्धि के लिए आप कोई भी कार्य करने में नहीं हिचकेंगी। शक्ति आपके अन्दर होगी परन्तु स्वभाव थोड़ा वादविवाद युक्त होगा। कभी कभी आप तर्कहीन बातें करेंगी। अतः अधिकतर लोग आपसे विरोध या शत्रुता का भाव ही रखेंगे। अतः आपको अपनी स्वभाव तथा वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए जिससे कोई अप्रिय स्थिति उत्पन्न न हो सके।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

जीवन में आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित हो सकती हैं। आपका चेहरा भी देखने में दीर्घ होगा। कभी कभी आप ऐसी कठोर वाणी का प्रयोग करेंगी जो सुनने वाले को अच्छी नहीं लगेगी। अतः आपको मधुर शब्दों का अपने वार्तालाप में प्रयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी कोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मेष योनि में उत्पन्न होने के कारण आप उत्साहप्रिय होंगी जो भी कार्य करेंगी उत्साहपूर्वक उसे सम्पन्न करेंगी। आप पराक्रमी तथा वाद विवाद करने में निपुण होंगी।

धन ऐश्वर्य से आप जीवन पर्यन्त युक्त रहेंगी। नैसर्गिक रूप से आप दूसरे की भलाई करने की मन में इच्छा रखेगी तथा यथाशक्ति उसे पूर्ण भी करेंगी।

महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः।
नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात मेषयोनि का जातक अतिउत्साही, महायोद्धा, पराक्रमी, ऐश्वर्यवान तथा परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

मार्गशीर्ष मास, पंचमी, दशमी, पूर्णमासी तथा अमावस्या, शनिवार, हस्तनक्षत्र, सुकर्मायोग, चौथा प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा आपके लिए अशुभफलदाता अर्थात अनिष्टकारी हैं। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य 5,10,15,30 तिथियों, हस्त नक्षत्र सुकर्मायोग में कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ न करें। न ही कोई योजना बनाएं अन्यथा हानि ही होगी। इसके अतिरिक्त शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इस समय में शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी सन्तोषी माता की आराधना तथा व्रत रखने चाहिए। इससे कष्ट दूर होंगे तथा मानसिक शान्ति प्राप्त होगी इसके अतिरिक्त श्वेत वस्त्र, चावल, शहद आदि पदार्थों का दान देना चाहिए साथ ही शुक्र के तांत्रीय मंत्र के 20 हजार जप करवाने चाहिए। इससे अशुभ फलों में न्यूनता आएगी।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।